उत्पत्ति २०

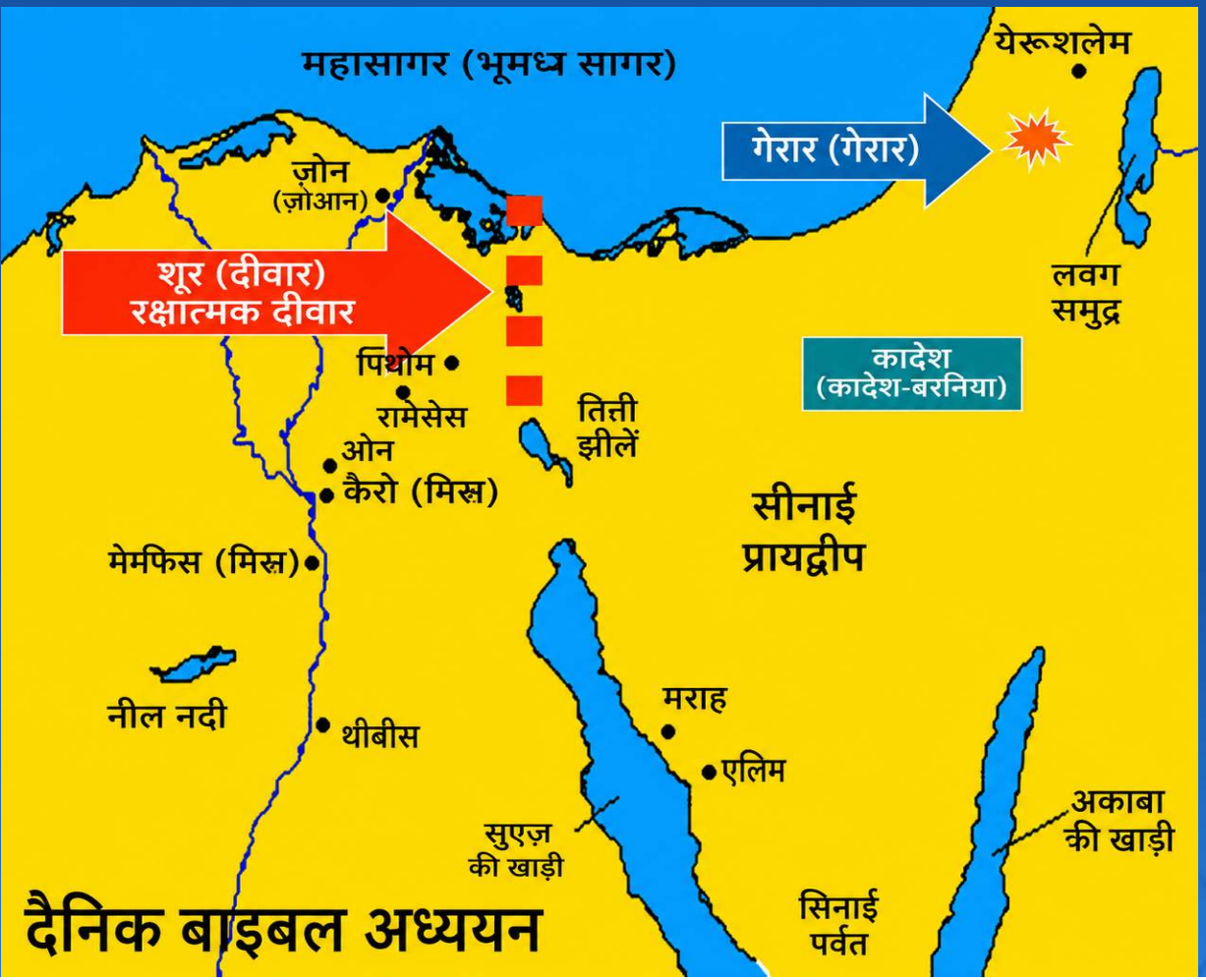

- अब्राहम हेब्रोन से अपनी यात्रा करता है।
- यह स्थानान्तरण नये चरागाह प्राप्त करने के लिए किया गया था।
- गेरार क्षेत्र, जो भविष्य में पलिश्तियों का देश बनेगा।
- गेरार का राजा अबीमेलेक।
- कादेश, जो कादेश-बर्ने के समान है।
- मिस्र देश में शूर।
- शूरा = शूर-अ का अर्थ है "दीवार"।

गाजा का क्षेत्र पूर्व में फलीश्तिया था

फलस्तीनियों के लिए यूनानी है फिलीश्ति

अब्राहम पुनः छल करने लगता है

- वह राजा अबीमेलेक से कहता है कि साराह उसकी बहन है।
- **अबीमेलेक** का अर्थ है "मेरा पिता राजा है"।
- बाइबिल में बाद में एक दूसरा और भिन्न अबीमेलेक भी आता है।
- उसने साराह को अपहरण के रूप में नहीं, अपितु पत्नी और मित्रता का सम्बन्ध बनाने के लिए लिया होगा।

यहोवा अबीमेलेक को धमकी देता है

- अबीमेलेक का बचाव यह था कि १) उसे ज्ञात नहीं था कि साराह विवाहित स्त्री है। २) उसने उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं बनाया।
- परमेश्वर उसके बचाव को स्वीकार करता है और कहता है कि यह मेरी ही दिव्य शक्ति थी जिसने उसे पाप करने से रोका।
- परमेश्वर अबीमेलेक को आज्ञा देता है कि वह साराह को लौटा दे।

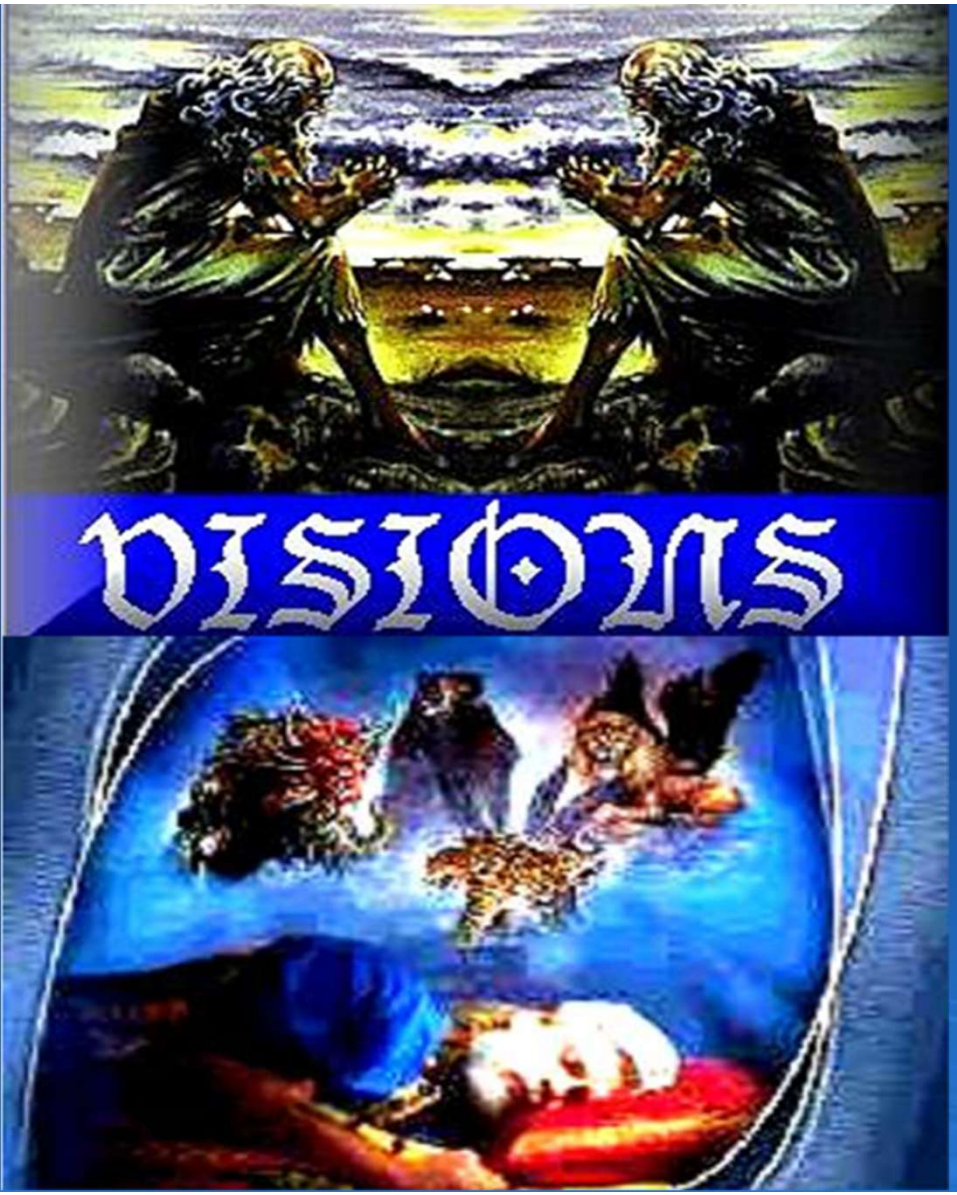

सपने और दर्शन

- उस युग में परमेश्वर और मनुष्यों के बीच सम्पर्क का सामान्य माध्यम सपने और दर्शन थे।
- अबीमेलेक एक अन्यजाति (पगान) था।
- यहोवा सभी वस्तुओं पर – यहाँ तक कि मनुष्यों पर भी – पूर्ण अधिकार रखता है!
- यहोवा अविश्वासियों से भी बात करता है।
- अबीमेलेक ने इस नए परमेश्वर को सहजता से स्वीकार कर लिया।

प्रबोधन काल (ज्ञानोदय)

- सन् १७०० के पूर्व, इतिहास में किसी भी समाज को किसी उच्चतर सत्ता (परमेश्वर) पर विश्वास न करने वाला नहीं जाना जाता था।
- प्रबोधन काल (ज्ञानोदय) नास्तिकता और धर्मनिस्पेक्ष मानवतावाद का जन्म था।

अब्राहम – मध्यस्थ

- अब्राहम अबीमेलेक के पक्ष में विनती करता।
- अब्राहम सदोम के “धर्मियों” के लिए पहले ही विनती कर चुका था।
- लूत के लिए मध्यस्थता करना।
- मूसा के “प्रकार” और स्वरूप का विकास हो रहा था।
- अब्राहम स्वयं स्वीकार करता है कि भय के कारण उसने साराह के विषय में पुनः झूठ बोला।
- अबीमेलेक ने अब्राहम को धन-सम्पत्ति दी और उसे वहाँ रहने के लिए कहा।

उत्पत्ति २१

- अध्याय १२ की प्रतिज्ञाओं के बाद पच्चीस वर्ष बीत चुके हैं।
- इसका अभिप्राय यह था कि अब्राहम और साराह को संतान होगी।
- अब्राहम इश्माएल को अपना वारिस समझता था।
- **परमेश्वर की भविष्यवाणियों को शाब्दिक रूप से ही लेना चाहिए।**

इस्राएल को इस भूमि से कभी नहीं निकाला जाएगा!

इसहाक नियत समय पर जन्म लेता है

- यित्सहाक (इसहाक) का अर्थ है “वह हँसता है”।
- बाइबिल में परमेश्वर द्वारा बहुत-सी “नियत” और “निर्धारित” समय नियुक्त किए गए हैं।
- मनुष्य को यहोवा की नियत समयों को बदलने या निरस्त करने का कोई अधिकार नहीं है।
- तथापि, कलीसिया के सिद्धान्त ने यहोवा के **प्रथम** नियत समय को बदलने का प्रयास किया है: **शब्बत**।

यहोवा नियत समयों को पवित्र घोषित करता है, और जो पवित्र है वह क्या है

- **उत्पत्ति २:१-३** इस प्रकार आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना पूर्ण हो गए। और सातवें दिन परमेश्वर ने अपना काम जो उसने किया था समाप्त किया, और सातवें दिन अपने सब काम से विश्राम किया। तब परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया, क्योंकि उसमें उसने अपने सब काम से जो उसने सृष्टि करके बनाए थे, विश्राम किया।
- **हमारा कर्तव्य यह नहीं है कि हम नियत समयों पर प्रश्न करें, अपितु यह कि हम उन्हें खोजें और उनका पालन करें।**
  मनुष्य को किसी भी वस्तु या व्यक्ति को पवित्रता प्रदान करने का कोई अधिकार नहीं है।

इसहाक का अद्भुत चमत्कारी जन्म

- अब्राहम एक सौ वर्ष का था, साराह नब्बे वर्ष की थी।
- साराह ने पहले कभी प्रसव नहीं किया था।
- यह अत्यन्त आश्चर्यजनक है कि नब्बे वर्ष की आयु में प्रसव काल को वह जीवित रहकर पार कर सकी!
- जब इसहाक का जन्म हुआ, तब इश्माएल किशोरावस्था में था।
- साराह ने हागार और इश्माएल को निर्वासित किए जाने की जिद की।

साराह परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर रही थी

- इसहाक "वाचा का पुत्र" होने वाला था, इश्माएल नहीं।
- **लिपित-इश्तार की व्यवस्था** यह स्पष्ट करती है:

  १) हागार साराह की ही दासी थी।

  २) अब्राहम यह चुन सकता था कि इश्माएल वारिस बने या नहीं, क्योंकि वह दासी से जन्मा था।

  ३) पिता यह अधिकार रखता था कि दासी-माता के साथ छोड़े जाने वाले बच्चों का क्या किया जाए।

  इश्माएल ने सम्पूर्ण उत्तराधिकार खो दिया।

परमेश्वर इश्माएल को सांसारिक आशीष प्रदान करेगा

- यहोवा ने इश्माएल को बारह राजकुमार (बारह कुल) देने की प्र तज्ञा की।
- **इस्राएल के कुलों की संख्या के समान!** इश्माएल को केवल एक ही वस्तु
- समान रूप से प्राप्त नहीं हो सकी, वह थी **वाचा की प्रतिज्ञा...**
- अब्राहम इश्माएल से बहुत प्रेम करता था, और उसे विदा करने में उसे अत्यन्त पीड़ा हुई।

मल’आख एलोहीम हागार को पुकारता है

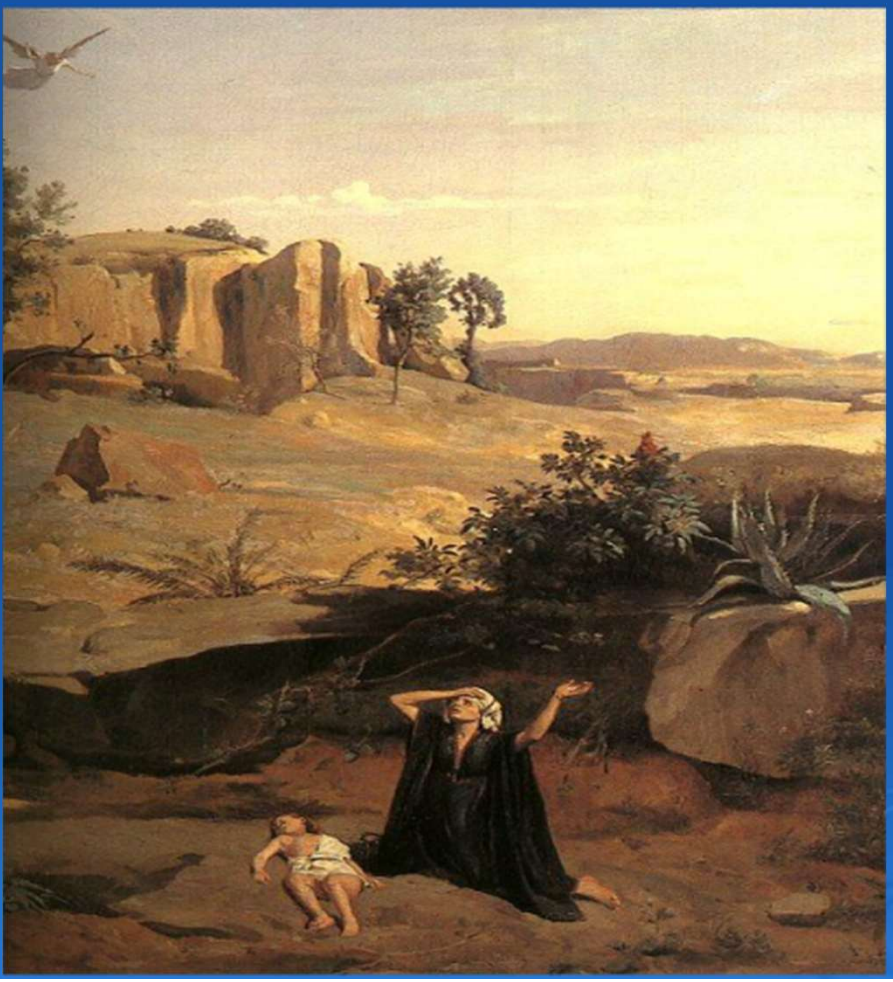

- “मल’आख एलोहीम” का अर्थ है “परमेश्वर का दूत”।
- क्या यह परमेश्वर था, या कोई स्वर्गदूत?
- वह कहता है, “मैं उसके द्वारा एक बड़ी जाति बनाऊँगा.....”
- यह अवश्य ही **यहोवा** का कोई प्रकट रूप था।
- इश्माएल को भूमि (क्षेत्र) की प्रतिज्ञा नहीं की गई... केवल **बारह जातियों** (राष्ट्रों) की प्रतिज्ञा की गई।
- इश्माएल सिनाई और अरबी प्रायद्वीप में मरुद्वीपी (रेगिस्तानी) निवासी बनेगा।

इसहाक और मसीह येशुआ (यहोशुआ) के बीच समानताएँ

- दोनों “वाचा के पुत्र” हैं।
- प्रतिज्ञा और जन्म के बीच दीर्घकाल व्यतीत हुआ।
- दोनों के जन्म चमत्कारिक थे – इसहाक सारह की “मृत” कोख से, और येशुआ एक कुंवारी कन्या की कोख से।
- दोनों के नाम उनके जन्म से पहले ही परमेश्वर ने निश्चित कर दिए थे।
- इसहाक और येशुआ दोनों के जन्म के लिए परमेश्वर ने **नियत समय** (निर्धारित समय) पहले से नियुक्त कर रखे थे।